जैसे को तैसा

एक स्थान पर जीर्णधन नाम का बनिये का लड़का रहता था। धन की खोज में उसने परदेश जाने का विचार किया। उसके घर में विशेष सम्पत्ति तो थी नहीं, केवल एक मन भर भारी लोहे की तराजू थी। उसे एक महाजन के पास धरोहर रखकर वह विदेश चला गया। विदेश स वापिस आने के बाद उसने महाजन से अपनी धरोहर वापिस मांगी। महाजन ने कहा- "वह लोहे की तराजू तो चूहों ने खा ली।"

बनिये का लड़का समझ गया कि वह उस तराजू को देना नहीं चाहता। किन्तु अब उपाय कोई नहीं था। कुछ देर सोचकर उसने कहाv-"कोई चिन्ता नहीं। चुहों ने खा डाली तो चूहों का दोष है, तुम्हारा नहीं। तुम इसकी चिन्ता न करो।"
थोड़ी देर बाद उसने महाजन से कहा -"मित्र ! मैं नदी पर स्नान के लिए जा रहा हूँ। तुम अपने पुत्र धनदेव को मेरे साथ भेज दो, वह भी नहा आयेगा।"

महाजन बनिये की सज्जनता से बहुत प्रभावित था, इसलिए उसने तत्काल अपने पुत्र को उनके साथ नदी-स्नान के लिए भेज दिया।

बनिये ने महाजन के पुत्र को वहाँ से कुछ दूर ले जाकर एक गुफा में बन्द कर दिया। गुफा के द्वार पर बड़ी सी शिला रख दी, जिससे वह बचकर भाग न पाये। उसे वहाँ बंद करके जब वह महाजन के घर आया तो महाजन ने पूछा -"मेरा लड़का भी तो तेरे साथ स्नान के लिए गया था, वह कहाँ है ?"
बनिये ने कहा -"उसे चील उठा कर ले गई है।"
महाजन -"यह कैसे हो सकता है? कभी चील भी इतने बड़े बच्चे को उठा कर ले जा सकती है?"

बनियाv-"भले आदमी ! यदि चील बच्चे को उठाकर नहीं ले जा सकती तो चूहे भी मन भर भारी तराजू को नहीं खा सकते। तुझे बच्चा चाहिए तो तराजू निकाल कर दे दे।"

इसी तरह विवाद करते हुए दोनों राजमहल में पहुँचे। वहाँ न्यायाधिकारी के सामने महाजन ने अपनी दुःख-कथा सुनाते हुए कहा कि, "इस बनिये ने मेरा लड़का चुरा लिया है।"

धर्माधिकारी ने बनिये से कहा -"इसका लड़का इसे दे दो।

बनिया बोल -"महाराज ! उसे तो चील उठा ले गई है।"

धर्माधिकारी -"क्या कभी चील भी बच्चे को उठा ले जा सकती है?"

बनिया -"प्रभु ! यदि मन भर भारी तराजू को चूहे खा सकते हैं तो चील भी बच्चे को उठाकर ले जा सकती है।"

धर्माधिकारी के प्रश्न पर बनिये ने अपनी तराजू का सब वृत्तान्त कह सुनाया।

<u>सीख :</u> जैसे को तैसा।

ल्लैम कै ठैभा

एक भ्रून पर स्वीलूणन नाभ का गनिये का लडका रहता था। धन की पिएए में उसने परदेम एने का विधार किया। उसके घर में विमेष समृद्धि ते थी नहीं, केवल एक भन हर हारी लोहे की ठराए थी। उसे एक भहाएन के पास धरोहर रापकर वह विदेम धला गया। विदेम से वापिस मुने के गाद उसने भहाएन से मपनी धरोहर वापिस भांगी। भहाएन ने कहा -"वह लोहे की ठराए ते धूहें ने पा ली।"

गनिये का लडका समझ गया कि वह उस ठराए के देना नहीं धाहता। किन्तु मग उपाय केाई नहीं था। कुछ दिर सेधकर उसने कहा-"केाई धिन्ता नहीं। धूहें ने पा हाली ते धूहें का देष है, तुम्हारा नहीं। तुम उसकी धिन्ता न करें।"
थेडी दिर गाद उसने भहाएन से कहा-"मित्र! मैं नदी पर स्नान के लिए ए रहा हूँ। तुम मपने पुत्र धनदेव के मेरे साथ हेए दे, वह ही नहा मुयेगा।"

भहाएन गनिये की सज्जनता से गहुत प्रहावित था, उसलिए उसने तत्काल मपने पुत्र के उनके साथ नदी-स्नान के लिए हेए दिया।

गनिये ने भहाएन के पुत्र के वहाँ से कुछ दूर ले एकर एक गुफा में गन्द कर दिया। गुफा के द्वार पर गडी सी मिला राप दी, एिससे वह गधकर हाग न पाये। उसे वहाँ गंद करके एग वह भहाएन के घर मुया ते भहाएन ने पूछा---"मेरा लडका ही ते ठेरे साथ स्नान के लिए गया था, वह कहाँ है?"
गनिये ने कहा -"उसे धील उठा कर ले गई है।"
भहाएन -"यह कैसे हे सकता है? कही धील ही उतने गडे गच्चे के उठा कर ले ए सकती है?"
गनिया-"हले मुदमी ! यदि धील गच्चे के उठाकर नहीं ले ए सकती ते धूहे ही भन हर हारी ठराए के नहीं पा सकते। तुम्हें गच्चा धाहिए ते ठराए निकाल कर दे दे।"
उसी तरह विवाद करते हुए दैनें राएसहल में पहुँधे। वहाँ न्यायाधिकारी के साभने भहाएन ने मपनी दुःप-कथा सुनाते हुए कहा कि, "उस गनिये ने मेरा लडका धुरा लिया है।"

धर्माधिकारी ने गनिये से कहा -"उसका लडका उसे दे दे।
गनिया गेल-"भहाराए ! उसे ते धील उठा ले गई है।"
धर्माधिकारी -"क्या कही धील ही गच्चे के उठा ले ए सकती है?"
गनिया -"प्रहु ! यदि भन हर हारी ठराए के धूहे पा सकते हैं ते धील ही गच्चे के उठाकर ले ए सकती है।"
धर्माधिकारी के प्रमा न पर गनिये ने मपनी ठराए का सग वृत्तान्त कह सुनाया।

सीप: ल्लैम कै ठैभा।

मनुवाद - पूजा वृन्दु